• भारतीय विद्या प्रकाशन •

सरस्वती तन्त्रम्

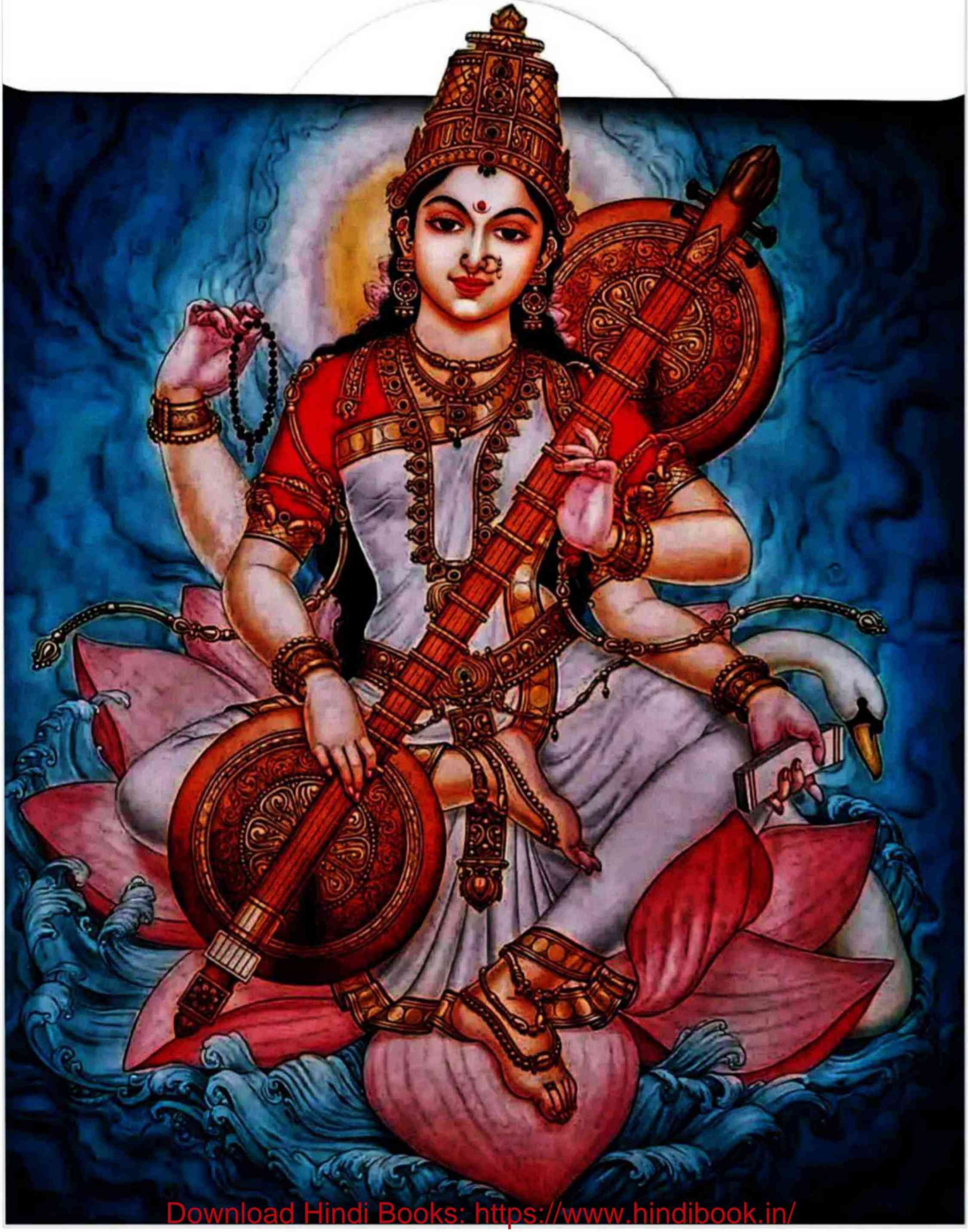

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

नविनर्मित

• भारतीय विद्या प्रकाशन •

(१) पो० बा० नं. ११०८ कचौड़ी गली, वाराणसी - २२१००१
(२) १, यू. बी. जवाहर नगर, बैंग्लोरोड, दिल्ली - ११०००७

मुद्रक- न्यू दीपक प्रेस राजघाट, वाराणसो

अनुवादक:
एस. एन. खंडेवाल

वाराणसी • दिल्ली

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

निवेदन

सरस्वती तन्त्र मूलतः स्वतंत्र ग्रन्थ नहींहै , यह किसी वृहद्‌तन्त्रग्रन्थ का अंश प्रतीत होता है, इसकी प्रतियाँ एशियाटिक सोसायटी ब ंगाल में ६००७ तथा ६०६, राजेन्द्र लाल मित्र की संस्कृत पुस्तिका के विवरण संख्या ४४७ तथा २६१ और बड़ौदा पुस्तकालय मेंक्रमसं ख्या २६१ के रूप में उपलब्ध है , सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्विद्यालय के ग्रन्थ संख्या २६१३८ के रूप मेंभी इसका अ ंकन हैं, मैमन सिंह जिला के पंम थुरानाथ तथा पावना के पं क्षितीशचन्द्र भट्टाचार्य के स ंग्रह में भी इसकी पाण्डुलिप रक्षित हैं।

यह ग्रन्थ शिवपार्वती संवादात्मक है, इसमेंछः पटल है , जैसा कि इसका नाम है, इसमें सरस्वती उपासना का अलग से कोई भी विवरण नही ं मिलता, इसमें म ूलाधार आिद चक्रों में देव ध्यान, िनर्वाण मुक्ति, कालिका आिद दिवयों के मन्त्र, यिोनम ुद्रा, मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य, कुल्लुका, महासेतु, प्राणयोग, शोधन आिद साधक के लिये अत्यन्त हितकारी साधनांग का समावेश है, किसी भी तन्त्र मार्गसे सा धना करने पर उक्त साधनोग का ज्ञान तथा सम्यक् अन ुशीलन आवश्यक है, इस प्रकार से यह ग्रन्थ समस्त शाक्ततन्त्रो ं की सा धना के लिये एक दिशािनर्देश का बोधन कराता है, साधनाङ्ग के ज्ञान के अभाव में सरस्वती विद्या कदािप सिद्ध नहींहो सकती ।

इस ग्रन्थ का नाम सरस्वती तन्त्रम् रखा गया है । वास्तव में भगवती सरस्वती कुलकुण्डलिन का उर्ध्वमुखी रूप हैं। महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती रूप सेसप्तशती में देवी के जिन रूपत्रय का वर्ण न है, वह वास्तव मेंकु लकुण्डलिनी ही के तीन रूप हैं। नाद-विन्दु तथा कला से साधक सामान्यतः परिचित हैं, कला का पर्यवसान ही महाकालिका हैं, नाद का पर्यवसान ही महासरस्वती का रूप हैऔर विन्दु का परम-चरम में पर्य वसान ही महालक्ष्मी का रूप है। इन्हीं तीनो ंरूपो ंका उत्कर्ष ही सप्तशती में वर्णित है, महासरस्वती ही इस स्थूल देह में स्वर-व्यं जन रूपा हो जाती हैं, सूक्ष्मदेह मेंवही नाद हैं और वह नाद अन्त में

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

प्रणवरूपता को प्राप्त करके महासरस्वती में लीन हो जाता है, यहीं मन्त्र चैतन्य तथा वासतिवक मन्त्रार्थ सिंथित की प्राप्ति है, जहाँ कहीं भी मन्त्रोपासना या जपप्रक्रिया की साधना की जाती है, वहाँ प्रकारान्तर से महासरस्वती की ही साधना होती है, चाहे वहां किसी भी देवता की साधना क्यों नहीं की जाये, नाद का पर्यवसान होने के अनन्तर ही महालक्ष्मी की प्रकृत साधना विन्दुलीनता के रूप में सम्भव है।

काली कलनात्मिका हैं, कलन मन का कृत्य है, मन से ही काल की कलना होती है, मन के विलीन होते ही काल स्तब्ध हो जाता है, खोजने पर भी उसका सन्धान नहीं मिलता, काली की उपासना से मन का यह कलन व्यापार समाप्त हो जाता है और अब भूत-भिवष्य-वर्तमान रूप खण्डकाल के विलीन होने पर नित्य वर्तमान रूप अखण्ड काल का साक्षात्कार होने लगता है, इसी सिंथित में यथार्थ प्रकृत नाद का साक्षात्कार होता है, यह प्रकृत नाद श्रुतिगोचर होने वाला योगीगण द्वारा अनुभूत नाद कदािप नहीं है, प्रकृतनाद की ही धारा समस्त मातृकाओं का एकीकरण करते हुये महासरस्वती का साक्षात्कार कराती है।

इस तन्त्र के प्रारम्भ में ही मातृकाओं की सिंथित का वर्णन करते हुये उन्हें क्रमशः निम्नस्थ चक्र से उर्ध्वस्थ चक्र में ले जाने का क्रम बतलाया गया है। इस प्रकार से निम्नस्थ चक्र की मातृका अपने से उध्वं चक्र में विलीन हो जाती है, ऐसा पुनः होता है अर्थात् निम्नस्थ चक्र की मातृका जिस चक्र में प्रविलीन हुई थी, अब वहाँ से उस चक्र की मातृका अपने से उर्ध्व चक्र में जाकर समिाहत हो जाती है। आज्ञाचक्र पर्यन्त ऐसा उत्तरोत्तर होता रहता है, इस प्रक्रिया में सुषुम्ना ही सूत्रात्मा है, वह समस्त चक्रों को प्राणरस से युक्त करती 'हंसः' का साक्षात् कराती है। यही है वासतिवक सरस्वती उपासना अथवा सरस्वती तन्त्र। यह प्राणरस 'हंसः' ही अपनी उन्नीत सिंथित में आत्मरस 'सोऽहम्' में समिाहत हो जाता है। यही सरस्वती तन्त्र का सार रहस्य है।

रामनवमी, १९९६ ई.

बी ३१/३२, लंका

वाराणसी

निवेदकः

एस. एन. खण्डेलवाल

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

विषयानुक्रमणिका

प्रथमः पटलः	१
द्वितीयः पटलः	४
तृतीयः पटलः	९
चतुर्थः पटलः	१३
पञ्चमः पटलः	१६
षष्टः पटलः	१९

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

प्रथमः पटलः

श्रीपार्वत्युवाच -

मन्त्रार्थ मन्त्रचैतन्यं यिोनमुद्रां न वेत्तियः ।
शतकोटिजपेनािप तस्य विद्या न सिध्यित ॥१॥
महादेव महादेव इित यत् पूर्वसूचितम् ।
एतत्तत्वं महादेव कृपया वद् शङ्कर ॥ २॥

पार्वती कहती हैं- हे महादेव, जो मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य तथा यिोनमुद्रा नहीं जानते, उन्हें शतकोटि संख्यात्मक जप करने से भी विद्या सिद्ध नहीं होती, आपने पहले भी यही कहा हैं, हे शङ्कर इस तत्व को (पुनः) कृपापूर्वक किहये ॥१-२॥

ईश्वर उवाचः

मन्त्रार्थ परमेशिान सावधानावधारय ।
तथाच मन्त्रचैतन्यं निर्वाणमुत्तमोत्तमम् ॥३॥
प्रसङ्गात् परमेशिान निगदामि तवाज्ञया ।
मूलाधारे मूलिवद्यां भावर्ये दिष्टदेवताम् ॥४॥

ईश्वर कहते हैं- हे परमेश्वरी, तुम सावधान होकर मन्त्रार्थ तथा मन्त्र चैतन्य को सुनो, हे परमेश्वरी तुम्हारी आज्ञा के अनुसार प्रसंगवशात् उत्कृष्टतम सिथित निर्वाण के सम्बन्ध में भी कहूंगा, मूलाधार पद्म में अवस्थित मूलिवद्या का (कुण्डलिनी का) इष्ट रूप में चिन्तन करो ॥३-४॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

शुद्धस्फटिकसङ्काशां भावयेत् परमेश्वरीम् ।
भावयेदक्षरश्रेणी मिष्टविद्यां सनातनीम् ॥५॥

परमेश्वरी की भावना शुद्ध निर्मल स्फटिक के समान करना चिाहए। उस मूलाधार कमल में स्थित व, श, ष, स अक्षरों को सनातनी इष्ट विद्या रूप से भावना करो ॥५॥

मुहूर्तार्द्धं विभाव्यतां पश्चाद्ध्यानपरो भवेत् ।
ध्याने कृत्वा महेशिान मुहूर्तार्द्ध ततः परम् ॥६॥
ततो जीवो महेशिान मनसा कमलेक्षणे ।
स्वाधिष्ठानं ततो गत्वा भावर्ये दिष्टदेवताम् ॥७॥
बन्धुकारूणसङ्काशां जवासिन्दूरसिन्नभाम् ।
विभाव्य अक्षरश्रेणीं पद्ममध्यगतां पराम ॥८॥
ततो जीवः प्रसन्नात्मा पक्षिणा सह सुन्दरि ।
मणिपूरं ततो गत्वा भावर्ये दिष्टदेवताम् ॥९॥

जीव मुहूर्तमात्र काल पर्यन्त इनका चिन्तन करके ध्यानरत हो जाये। हे महेश्वरी! हे कमलनेत्रों! वाली तदनन्तर मन द्वारा स्वाधिष्ठान चक्र में जाकर इष्टदेव का चिन्तन करे, वहाँ वन्धूकारूण, जवापुष्प तथा सिन्दूर के समान गाढ़े रक्तवर्ण युक्त अक्षर ब, भ, म, य, र, ल की इष्टदेवता रूप से भावना करके प्रसन्नचित्त हो जाये, हे सुन्दरी! वह प्रसन्नचित्त जीव मन द्वारा मणिपूर चक्र में जाकर इष्ट का चिन्तन करे ॥६-९॥

विभाव्य अक्षरश्रेणीं पद्ममध्यगतां पराम् ।
शुद्धहाटकसङ्काशां शिवपद्मोपरि स्थिताम् ॥१०॥
ततो जीवो महेशिान पक्षिणा सह पार्वति ।
हृत्पद्मं प्रययौ शीघ्रं नीरजायतलोचने ॥११॥
इष्टविद्यां महेशिान भावयेत् कमलोपरि ।
विभाव्य अक्षरश्रेणीं महामरकतप्रभाम् ॥१२॥
ततो जीवो वारारोहे विशुद्धं प्रययौ प्रिये ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तत्पद्मगहनं गत्वा पक्षिणा सह पार्वति ॥१३॥
इष्टविद्यां महेशिान आकाशोपरि चिन्तयेत् ।
पक्षिणा सह देवेशि खञ्जनाक्षि शुचिस्मिते ॥१४॥
इष्टविद्या महेशिान साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
विभाष्य अक्षरश्रेणीं हरिद्वर्णां वरानने ॥१५॥
आज्ञाचक्रे महेशिान षट्चक्रे ध्यानमाचरेत् ।
षट्चक्रे परमेशिान ध्यानं कृत्वा शुचिस्मिते ॥१६॥
ध्यानेन परमेशिान यद्रूपं समुपस्थितम् ।
तदेव परमेशिान मन्त्रार्थं विद्धि पार्वति ॥१७॥

मणिपूर चक्रस्थ दशदलपद्म में विशुद्ध अक्षर श्रेणी **ड ढ ण त थ द ध न प फ** का शिरः पद्म के ऊपर स्थित परमदेवतारूप से चिन्तन करे। हे महेश्वरी! हे कमललोचनी! तदनन्तर जीव शीघ्रता से (मन द्वारा) हृदयकमल में पहुँचे।

हे महेशानी! इष्टविद्या का चिन्तन पद्म के ऊपर स्थित रूप से करे। वहाँ अक्षर श्रेणी **क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ** (द्वादशदलपद्म) का चिन्तन महामरकत मणि के वर्ण से करे।

हे पार्वती! हे सुन्दरी! तत्पश्चात् जीव विशुद्ध कमल में जाकर वहाँ हरित वर्ण के अक्षर श्रेणी (१६ स्वरवर्ण का) का चिन्तन साक्षात् ब्रह्मरूपिणी इष्टविद्यारूपेण करे, इसके पश्चात् आज्ञाचक्र में (मन द्वारा) जाकर उस चक्र में स्थित अक्षर ह, क्ष के साथ अभेद भावना से इष्ट देवता की भावना करे, हे शुचिस्मिते! यह षट्चक्र ध्यान का क्रम है, इस ध्यान के द्वारा जो रूप प्रतिभात होता है, वही मन्त्रार्थ है ॥१०-१७॥

। इति सरस्वतीतन्त्रे प्रथमः पटलः ।

। सरस्वतीतन्त्र का प्रथम पटल समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

द्वितीयः पटलः

ईश्वर उवाच -

तथाच मन्त्र चैतन्यं लिङ्गागमे प्रकाशितम् ।
यिोनमुद्रा मयाख्याता पुरा ते रुद्रयामले ॥१॥
इदानीं श्रूथतां दिव निर्वाणं येन विन्दित ।
प्रपञ्चोऽपि ततो भूत्वा जीवस्तु पक्षिणा सह ॥२॥
प्रययौ परमं रम्यं निर्वाणं परमं पदम् ।
सहस्त्रारं शिवं पूज्यं तन्मध्ये शाश्वती पुरी ॥३॥
तास्तु दिव पुरीं विद्धि सर्वशक्तिमयीं प्रिये ।
पक्षिणा सह देवेशि जीवः शीघ्रं प्रयित हि ॥ ४ ॥

ईश्वर कहतेहैं - हे देवी! मन्त्र चैतन्य किसे कहते हैं, यह **लिंगागम** में कहा गया है, पहले **रुद्रयामल तन्त्र** में मैंने यिोनमुद्रास्वरूप का उपदेश दिया है, अब जिसके द्वारा निर्वाणरूपी परम सुख मिलता है, वह सुनो। जीव प्रपंचरूप हो अर्थात् समस्त प्रपंच को, विश्व को, अपने में अभेदरूप से देखकर पक्षी के साथ (पक्षी अर्थात् उर्ध्वगित रूपी स्पन्द के साथ) निर्वाण रूप परम पद में गमन करता है, सहस्त्रदल कमल मंगलमथ है और पूज्य स्थान है, वह नित्य पुरी भी है, हे देवी! हेंप्रिये! वह पुरी सर्वशक्तिमयी है।

यहाँ यह भावना करो कि विश्व प्रपंच की निर्माणोपयोगी समस्त सामग्री वहाँ है, कुण्डलिनी के साथ जीव को उस पुरी में ले जाना चािहये ॥१-४॥

विभाव्य अक्षरश्रेणीममृतार्णवशिायनीम् ।
सदाशिवपुरं रम्यं कल्पवृक्षतलस्थितम् ॥५॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

नानारत्नसमाकीर्णंतन्मूलंकमलानने ।
वृक्षञ्च परमेशिान सततंत्रिगुणात्मकम्॥६॥
पञ्चभूतात्मकंवृक्षंचतुःशाखासमन्वितम्।
चतुःशाखांचतुर्वेदंचतुर्विंशिततत्वकम्॥७॥

अब समस्त अक्षर समूह अमृत समुद्र में शयन कर रहे हैं, यह चिन्तन करके वक्ष्यमाण विषय का चिन्तन करे। हे कमलानने! कल्पवृक्ष के नीचे मनोरम सदाशिवपुरी है। उसका मूल नानाप्रकार के रत्नों के द्वारा व्याप्त है। , हे परमेश्वरी! वह वृक्ष सर्वदा त्रिगुणात्मक है, सत्व-रज-तमोमय है, वह पंचभूतमय वृक्ष ऋक्-यजुः साम एवं अथर्व रूपी चार शाखाओं से शोभित है, यही २४ तत्वात्मक भी है ॥५-७॥

चतुर्वर्णयुतंपुष्पंशुक्लंरक्तं शुचिस्मिते।
पीतंकृष्णंमहे शिान पुष्पद्वयंपरं श्रृणु॥८॥
हरितञ्च महेशिान विचित्रंसर्व मोहनम्।
षट्पुष्पाणि महेशिान षड्दर्शनमिदंस्मृतम्॥९॥
अन्यिान क्षुद्रशास्त्राणि शाखिान मीनलोचने।
तिान सर्वाणि पत्राणि सर्वशास्त्राणि चेश्वरि ॥१०॥

हे शुचिस्मिते! उस वृक्ष का पुष्प चार वर्ण युक्त है, यथा शुक्ल, रक्त, पीत एवं कृष्ण। हे महेश्वरी! और भी दो प्रकार के पुष्प हैं। वे हैं हरितवर्ण तथा नानिावचित्र वर्ण वाले, वे सभी मन को मिोहत करने वाले हैं। ये ६ प्रकार के पुष्प ही षड्दर्शनशास्त्र हैं।

हे मीननेत्रे! अन्य छोटे-छोटे शास्त्र वृक्ष की छोटी शाखायें हैं ॥८-१०॥

इतिहासपुराणिान सर्वाणि वृक्षसंस्थितम्।
त्वगस्थिमेदमज्ञानि वृक्षशाखिान यिान च ॥११॥
तिान सर्वाणि देवेशि इन्द्रियाणि प्रकीर्त्तितम्।
सर्वशक्तिमयंदिव विद्धि त्वं मीनलोचने ॥१२॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतिहासपुराणिाद इस वृक्ष के त्वक्, अस्थि तथा मेद एवं मज्जारूप हैं। हे देवेशी! वृक्ष की शाखा िआद को इन्द्रिय भी कहा गया है। हे मीननेत्रोंवाली! तुम उक्त वृक्ष को सर्वशक्तिमय जानो ॥११-१२॥

एवद्भूतं महावृक्षभ्रमरैः परिशोभितम् ।
किोकलैः परमेशिान शोभिता वृक्षपक्षिभिः ॥१३॥

हे परमेश्वरी! यह महावृक्ष अमरदेवों द्वारा परिशोभित है। किोकल प्रभृ ति वृक्ष के पक्षियों द्वारा भी यह शोभित है ॥१३॥

सुशोभितं देवगणै र्धनरत्नादिकांक्षिभिः ।
एवं कल्पद्रुमं ध्यात्वा तदधो रत्नर्वे दकाम् ॥१४॥
तत्रोपरि महेशिान पर्यङ्कं भावयेत् प्रिये ।
सूक्ष्मं हि परमं दिव्यं पर्यङ्कं सर्वमोहनम् ॥१५॥

घनरत्नादि की अभिलाषा रखने वाले साधक को देवताओं से शोभित कल्पतरु का चिन्तन करके उसकी छाया में नीचे रक्खी रत्नमयी वें दिका की भावना करनी चािहये। हें प्रिये! हे महेशानी! उस वें दिका पर सूक्ष्म परम िदव्य, सर्वमोहन पलंग की भावना करे ॥१४-१५॥

चन्द्रकोटिसमं दिव सूर्यकोटिसमप्रभम् ।
शीतांशुरश्मिसंयुक्तं नानागन्धसुमिोदतम् ॥१६॥
नानापुष्पसमूहेन रचितं हेममालया ।
ततः परं महेशिान यिोगनीकोटिर्वे ष्ठितम् ॥१७॥
यिोगनीमुखगन्धेन भ्रमराः प्रपतन्ति च ।
यिोगनी मिोहनी साक्षात् वें ष्ठितं कमलेक्षणे ॥१८॥

हे देवी! वह पलंग करोड़ों चन्द्रमा के समान तथा करोड़ों सूर्य के समान प्रभायुक्त हैं। वह चन्द्र किरणों से युक्त तथा विभिन्न सुगन्धों से आमिोदत हैं। यह पलंग नानापुष्प समूह से सजाई गई है तथा स्वर्णमालाओं से

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सुशोभित है। हेमहे श्वरी! यह पलंग करोड़ोंयोगिनियो ंसे घिरी हुई हैं । उन योगिनियोंके म ुख की सुगन्ध सेआकर्षित होकर भ्रमरगण वहाँआ रहे हैं । हेकमलवदने ! जिन योगिनी के लियेयह पल ंग घिरी है, वेयोगिनी सा क्षात् मिोहनीरूप हैं॥१७-१८॥

अत्यन्तकोमलं स्वच्छं शुद्धफेनसमंा प्रिये ।
पर्यङ्कः परमेशिान सदाशिवः स्वयं पुनः ॥१९॥

हेप्रिये ! वह अत्यन्त कोमल तथा शुद्ध फेन के समान स्वच्छ पलंग है। हे परमेश्वरी! स्वयंसदाशिव ही पल ंग स्वरूप हैं॥१९॥

जीवः पुष्पं वदेत् दिव भावयेत्तव पार्व ति ।
सदाशिवं महेशिान तन्महाकुण्डलीयुतम् ॥२०॥

हे देवी! जीव पु ष्प स्वरूप है, वह तुम्हारी भावना करे। हे महे श्वरी! महाकुण्डलीयुक्त सदाशिव हैं॥२०॥

कामिनीकोटिसंयुक्तं चामरैर्हस्तसंस्थितम् ।
एवंा विभाव्य मनसि सदा जीवः शुचिस्मिते ॥२१॥

हेश ुचिस्मिते! (शुद्ध हास्य करनेवाली) वेसदाशिव करोड़ो ंकामिनीगण से युक्त हैं, कामिनी हाथ मेंचामर लिये है । जीव को सदा इसी प्रकार से चिन्तन करना चािहये॥२१॥

यस्य यस्य महेशिान यिदर्ष्ट कमलानने ।
तस्य ज्ञानसमायुक्तो मनसा परमेश्वरि ॥२२॥
जीवोध्यानपरो भूत्वा जपेदस्य शतंा प्रिये ।
मन्त्राक्षरं महेशिान मातृकापुटितं क्रमात् ॥२३॥

हेमहे शानी, परमेश्वरी! कमलवदने! जिनका जिनका जो भी इष्ट है, वेमन ही मन उस इष्ट के साथ ज्ञानयुक्त हो व्यानरत रहेंऔर इष्टदेव के

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मन्त्राक्षरोंको मातृकावर्णद्वारा क्रमशः पुटित करके सौ (१००) बार जप करें ॥२२-२३॥

कृत्वा जीवः प्रसन्नात्मा जपेदस्य शतंप्रिये ।
यत्संख्यापरमारेणौ पिार्थवेपरिवर्त्त ते।
तावद्वर्षसहस्त्राणि शिवलोके महीयते॥२४॥

जीव प्रसन्तचित्त सिंथित में इष्टमन्त्र १०० बार जपे। इससे पार्थिव परमाणुओंकी जितनी सं ख्या है, उतनेहजार वर्ष पर्य न्त जीव शिवलोक में निवास करता है।

। इति सरस्वतीतन्त्रे द्वितीयः पटलः ।

। द्वितीय पटल समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

तृतीयः पटलः

देव्युवाच -

कुल्लुका कीदृशी नाथ सेतुर्वाकीदृशो भवे त्।
कीदृशो वा महासेतुर्निर्वाणंत्वय कीदृशम् ॥१॥
अन्यथा किथतंयन्मे कीदृशं तद्वदस्व मे ॥२॥

देवी कहती हैं- हे प्रभो! कुल्लुका कैसा है? सेतु-महासेतु तथा निर्वाण क्या है?

आपने जितने जपांग कहे हैं, वे किस प्रकार के हैं? ॥१-२॥

ईश्वर उवाच-

गुह्याद्ग्.ह्यतरंदिव तब स्ने हेन कथ्यते।
बिना येन महेशिान निष्फलश्च जपादकम् ॥३॥

ईश्वर कहते हैं- हे देवी! जिसके बिना जप प्रभृ ति निष्फल हो जाते हैं, उस गुह्यतम ज्ञान को तुम्हारे प्रेमवश प्रकाशित करता हूँ ॥३॥

ताराया: कुल्लुका दिव महानीलसरस्वती ।
पञ्चाक्षरी कालिकाया: कुल्लुका परिकीर्त्तिता ॥४॥

हे देवी! महानीलसरस्वती का बीज (**ह्रीं, स्त्रीं, हुं**) समस्त तारामन्त्रों का कुल्लुका है। पंचाक्षरी मंत्र को कालिका का कुल्लुका कहते हैं ॥४॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कालीकूर्चवधुर्माया फट्कारान्ता महेश्वरि ।
छिन्नायास्तुमहे शिान कुल्लुकाष्टाक्षरी भवेत् ॥५॥

हे महेश्वरी! काली बीज, कूर्चबीज, वधुबीज तथा मायाबीज के अन्त में **'फट्'** लगाने से जो पंचाक्षर मन्त्र होता है, वही काली देवी का कुल्लुका कहा जाता है। **(क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्)**, हे महेश्वरी! अष्टाक्षरी मन्त्र छिन्नमस्ता देवी का कुल्लुका कहां गया है ॥५॥

वज्रवैरोचनीयेव अन्ते वर्म प्रकीर्त्त येत्।
सम्पत्प्रदाया : प्रथमंभै रव्याः कुल्लुका भवेत् ॥६॥

'वज्रवैरोचनीये' पद के अन्त में **'फट्'** का उच्चारण करने से यह अष्टाक्षर हो जाता है **(वज्ज्रवैरोचनीये फट्)**, भैरवी का प्रथम बीज ही धनदा का कुल्लुका कहा गया है ॥६॥

श्रीमित्रपुरसुन्दर्याः कुल्लुका द्वादशाक्षरी ।
वाग्भवंप्र थमंबीजं कामबीजमनन्तरम् ॥७॥
लक्ष्मीबीजंततः प श्चात्त्रिपु रे चेति तत्परम् ।
भगवतीत तत्पश्चात्अन्ते ठद्वयमुद्धरेत् ॥८॥

द्वादशाक्षर मन्त्र को त्रिपुर सुन्दरी का कुल्लुका कहते हैं, प्रथमतः वाग्भव तदन्तर कामबीज, तत्पश्चात् लक्ष्मीबीज, तदन्तर त्रिपुरे, तत्पश्चात् भगवती, तत्पश्चात् स्वाहा लगाने से द्वादशाक्षरी कुल्लुका होता है जैसे **'ऐं क्लीं श्रीं त्रिपुरे भगवित ठः ठः'** ॥७-८॥

अथवा कामबीजञ्च कुल्लुका परिकीर्त्तिता ।
प्रासादबीजंशम्भो श्च मञ्जुधोषेषड क्षरम् ॥९॥

अथवा केवल कामबीज **(क्लीं)** ही त्रिपुरा का कुध्लुका है, प्रसाद बीज **(ह्रौं)** शिवमन्त्र का कुल्लुका है, षड्क्षरमन्त्र ही मंजुघोष मंत्र का कुल्लुका कहा गया है - **ॐ नमः शिवायः** ॥९॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

एकार्णाभु वनेश्वर्याविष्णोः स्यादष्टवर्ण कम्।
नमो नारायणायेति प्रणवाद्या च कुल्लुका ॥१०॥

एकाक्षर मंत्र (ह्रीं) भुबनेश्वरी बीज का कुल्लूका है। विष्णु मन्त्र का कुल्लूका है अष्टाक्षर मन्त्र अर्थात् **'नमो नारायणाय'** के पहले ॐ लगाये । **'ॐ नमो नारायणाय'** ।।१०।।

मांतङ्गयाः प्रथमं बीजं माया धूमावतीं प्रति ।
बालायाश्च वधूबीजं लक्ष्म्याश्च निजबीजकम् ॥११॥

प्रथम बीज (ॐ) मातंगी का कुल्लुका है एवं मायाबीज (ह्रीं) धूमावती का कुल्लुका कहा जाता है। बालामन्त्र का कुल्लुका है वधुबीज (स्त्रीं) तथा लक्ष्मी मन्त्र का कुल्लुका (श्रीं) ही है ॥११॥

सरस्वत्या वाग्भवञ्च अन्नदाया अनङ्गकम्।
अपरेषाञ्च देवानांमन्त्रमात्र प्रकीर्त्तिता ॥१२॥

सरस्वती मन्त्र का कुल्लुका हैं (ऐं), अन्नदा देवी का कुल्लुका है कामबीज (क्लीं), अन्य देवताओं का कुल्लुका उनका अपना ही मन्त्र है ॥१२॥

इयन्तेकि थता दिव संक्षेपात्फु ल्लुका मया ।
अज्ञात्वा कुल्लुकामेतांयो जपे दधमः प्रिये॥१३॥

हे देवी! मैंने संक्षेप में यह कुल्लुका कहा है। हे प्रिये! जो अधम मनुष्य बिना कुल्लुका को जाने मन्त्र जप करते है- ॥१३॥

पञ्चत्वमाशुलभते सिद्धिहिनस्तु जायते ।
तथा जपिादकंसर्व निष्फलं नात्र सं शयः ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन प्रजपेन्मूर्ध्नि कुल्लुकाम्॥१४॥

वे शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं और उनकी सिद्धि नष्ट हो जाती है,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

उनकी जपादि समस्त साधना निष्फल होती है। अतः यत्नपूर्वक मस्तक के उपर मूर्द्धा में कुल्लुका जपे ॥१४॥

। इति सरस्वतीतन्त्रे द्वितीयः पटलः ।

। द्वितीय पटल समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

चतुर्थः पटलः

ईश्वर उवाच-

अथ वक्ष्यामि देवेशि प्राणयोग शृणुष्व में।
बिना प्राणंय था देहः सर्वकर्मसुन क्षमः ॥१॥
बिना प्राणंत था मन्त्रः पुरश्चर्याशतैरिप ।
मायया पुटिता मन्त्रः सत्वधा जपतः पुनः ॥२॥
सप्राणो जायतेदिव सर्व त्रायंविधि धिः स्मृतः ।
तथैव दीपनींव क्ष्येसर्व मन्त्रेषुभिाविन ॥३॥
अन्धकारगृहेयद्वन्न किञ्चित् प्रतिभासते ।
दीपनीवर्जिता मन्त्र स्तथैव परिकीर्त्तितः ॥४॥

ईश्वर कहते हैं- अब प्राणयोग अर्थात् मन्त्र का प्राणसम्बन्ध कहता हूँ। हे देवेशी! उसे श्रवण करो, जैसे प्राणरहित देह कार्य नहीं करता, उसी प्रकार प्राणरहित मन्त्र सैकड़ों पुरश्चरणों से भी सिद्ध नहीं हो सकता। हे देवी! **(ह्रीं)** मन्त्र से सम्पुटित करके ७ बार मन्त्र जप करने से वह सप्राण हो जाता है, सभी देवों के मन्त्र के साथ यही करना चिाहये, हे भिावनी! सभी मन्त्रों का दीपनी मन्त्र अब कहूँगा। जैसे दीपक के बिना अंधेरे घर में कुछ नहीं दीखता, उसी प्रकार दीपनी के बिना मन्त्र का तत्व प्रकाशित नहीं हो सकता ॥१-४॥

वेदिादपुटितंमन्त्रं सप्तवारं जपे त्पु नः ।
दीपनीय समाख्याता सर्वत्र परमेश्वरि ॥५॥

हे महेश्वरी! मन्त्र को प्रणव (ॐ) से सम्पुटित करके ७ बार जपे, यही मंत्रों

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

का दीपनी करण है ॥५॥

जातसूतकमादौ स्पादन्तेच मृतसूतकम्।
सूतकद्वयसंयुक्ता यो मन्त्रः स न सिध्यित ॥६॥

मन्त्र जप के आिद में जन्म का शौच तथा मन्त्र जप के अन्त में मरण शौच लगता है। अतः अशौचयुक्त मन्त्र सिद्ध नहीं होते ॥६॥

वेदिादपुटितंमन्त्रं सप्तवारं जपे न्मुखे।
जपस्यादौ तथा चान्तेसूतकद्वय ॥७॥

इन अशौचों को हटाने के लिये ॐ से पुटित मन्त्र ७ बार जपे ॥७॥

अथोच्यतेजपस्यात्र क्रम श्च परमादभुतः ।
यंकृत्वा सिद्धिसङ्घननांमधिपो जायतेनरः ॥८॥

अब जप का अत्यन्त अद्भुत क्रम कहता हूँ, जिसके अनुष्ठान से मनुष्य समस्त सिद्धि प्राप्त कर लेता है ॥८॥

नित गुर्वादीनामादौ ततो मन्त्रशिखांभजे त्।
ततोऽपि मन्त्रचैतन्यंमन्त्रा र्थभावनांततः ॥९॥

प्रथमतः गुरु प्रभृति को प्रणाम करे तदन्तर मंत्रशिखा जपे। तत्पश्चात् मन्त्र चैतन्य की भावना करके उसके उपरान्त मन्त्रार्थ भावना करे ॥९॥

गुरु ध्यानंशिरःपद्मै हृदीष्ट ध्यानमावहन्।
कुल्लुकाञ्च ततः सेतुंमहासे तुननन्तरम्॥१०॥
निर्वाणञ्च ततो दिव यिोनमुद्राविभावनाम्।
अङ्गन्यासंप्राणायाम जिह्वाशो धनमेव च ॥११॥
प्राणयोग दीपनीञ्च अशौचभङ्ग मेव च ।
भ्रूमध्येवा नसोरग्रै दृष्टिं सेतुजपंपुनः ॥१२॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सेतुमशौचभङ्गञ्च प्राणायामर्मिमित क्रमात् ।
एतत्तेकि यंत दिव रहस्य जपकर्मणः ॥१३॥
गोपनीयंप्रयत्ने न शपथस्मरणान्मम ।
एतत्तन्त्रंगृहेयस्य तत्रां ह सुरवन्दिते।
तिष्ठामि नात्र सन्देहो गोप्तव्यममरेषविप ॥१४॥

शिर स्थित पद्म में गुरु ध्यान करे। हृदय में इष्टदेव का ध्यान करके कुल्लुका जपे। तदन्तर सेतु जप, तत्पश्चात् महासेतु जप करना चिाहये।

हे देवी ! अब क्रमशः यह करे-

- **निर्वाण जप**
- **यिोन मुद्रा भावना**
- **अंगन्यास**
- **प्राणायाम**
- **जिल्ह्वाशोधन**
- **प्राणयोग**
- **दीपनी कर्म जप**
- **अशौचभंग जप**

भ्रूमध्य में या नासाग्र में दृष्टि करके सेतु जप करे, पुनः जप के अन्त में यह क्रमशः करे-

- **सेतु जप**
- **अशौचभंग जप**
- **प्राणायाम**

हे देवी! तुमसे यह सब जप कर्म का रहस्य कहा, मेरी प्रतिज्ञा को याद रखकर इसे गुप्त रखना, हे सुरो द्वारा नमस्कृते! जिसके घर में यह तन्त्र है, वहाँ मैं रहता हूँ, यह निः संदिग्ध है, इसे देवताओं से भी गुप्त रखना ॥९-१४॥

। इति सरस्वतीतन्त्रे चतुर्थः पटलः ।

। चतुर्थ पटल समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

पञ्चमः पटलः

ईश्वर उवाच -

अर्थातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्व तंप्रियस्वदे ।
यस्याज्ञानेन विफलंजपहोमादकं भवे त् ॥१॥

ईश्वर कहते हैं-हे प्रियम्वदे! जिसे जाने बिना होम प्रभृति विफल हो जाते हैं; उसेकहता हूँ । श्रवण करो ॥१॥

कुल्लुकांमूर्ध्नि संजप्य हृदि सेतुंविचिन्तये त् ।
महासेतुंविशुद्धे तुकण्ठदेशे समुद्धरेत् ॥२॥

मस्तक के उर्ध्व में (मूर्धा में) कुल्लुका का जप, हृदय में सेतुचिंन्तन, महासेतुका विशुद्ध चक्र मेंउद्धार करे अ र्थात्उच्चारण करे ॥२॥

मणिपुरे तुनिर्वा णंमहाकु ण्डलिनीमधः ।
स्वाधिष्ठानेकामबीजं रिाकनीमूर्ध्नि संस्थितम् ॥३॥

मणिपुर चक्र मेंमहाकुण्डलिनी का निर्वाण चिन्तन अधोदक्रूप से करे। स्वाधिष्ठान मेंकामबीज का, रिाकनी शक्ति का मूर्द्धामें चिन्तन करे ॥३॥

विचिन्त्य विधिवद्देवि मूलाधारान्तिकाच्छिवे।
विशुद्धास्तांस्मरेद्दे वि विसतन्तुतनीयसीम् ॥४॥

हेदिव! हे शिवे ! यह सब चिन्तन करके मूत्राधार सेविशुद्ध चक्र पर्यन्त

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

प्रसरित् मृणालसूत्र के समान सूक्ष्मतम कुण्डलिनी का चिन्तन करे। तदनन्तर "सर्पाकृ ति कुण्डलिनी के अन्त में अवस्थित वेदी स्थान मूलमन्त्र से आवरित है, -' यह चिन्तन बारम्बार करे ॥४॥

वेंदस्थानं द्विजिह्वान्तं मूलमन्त्रावृतं मुहुः ।
विप्राणां प्रणवः सेतुः क्षत्रियाणां तथैव च ॥५॥
वैश्यानाञ्चैव फट्कारो माया शूद्रस्य कथ्यते ।
अजप्त्वा हृदि देवेशि या वै मन्त्रं समुच्चरेत् ॥ ६ ॥

ब्राह्मण तथा क्षत्रिय के लिए प्रणव (ॐ) सेतु है, वैश्य का सेतु है **(फट्)** तथा शूद्र का सेतु है मायाबीज **(ह्रीं)**, जो हृदय में पूर्वोक्त जप न करके मन्त्रोच्चारण करते हैं, उन्हें मन्त्र जप का अधिकार नहीं है ॥५-६॥

सर्वेषामेव मन्त्राणांमधिकारो न तस्य हि ।
महासेतुश्च देवेशि सुन्दर्या भुवनेश्वरी ॥७॥
कालिकायाः स्वबीजञ्च तारायाः कूर्चजीजकम् ।
अन्यासान्तु वधुबीजं महासेतुर्वरानने॥८॥

हे देवेशी- सुन्दरी का महासेतु है **(ह्रीं)**, कालीबीज का **(क्लीं)**, तारा देवी का हुं अन्य देवताओं का महासेतु है **(स्त्रीं)** ॥७-८॥

आदौ जप्त्वा महासेतुं जपेन्मत्रमनन्य धीः ।
धने धनेशतुल्योऽसौ वाण्या वागीश्वरोपमः ॥९॥
युद्धे कृतान्तसदृशो नारीणां मदनोपमः ।
जपकाले भवेत्तस्य सर्वकाले न संशयः ॥१०॥

पहले महासेतु का जप करके तव एकाग्र हो मंत्र जपे, इस प्रकार से जप करने पर जपकर्त्ता धन की दृष्टि से कुबेरतुल्य, काव्य प्रयोग में वागीश्वर के तुल्य, युद्ध में यमराज के तुल्य तथा रमणी समूह में कामदेव के तुल्य प्रतीत होता है, उसके लिये सभी काल जप के लिये उपयुक्त है ॥९-१०॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अथ वक्ष्यामि निर्वाण शृणु साविहताऽनघे ।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मातृकाद्यं समुद्धरेत् ॥११॥
ततो मूलं महेशिान ततो वाग्भवमुद्धरेत ।
मातृकान्तं समस्तान्तु पुनः प्रणवमुद्धरेत् ॥१२॥
एवं पुटितमूलन्तु प्रजपेन्मणिपूरके ।
एवं निर्वाणमीशिान यो न जानित पामरः और॥ १३ ॥
कल्पकोटिसहस्त्रेण तस्य सिद्धिर्न जायते ॥१४ ॥

अब निर्वाण का स्वरूप कहता हूँ, जिसे सावधान होकर सुनो। प्रथमतः प्रणव का उच्चारण करे। हे महेश्वरी! इसके पश्चात् मूलमंत्र और अन्त में 'ऐं' बीज का उच्चारण करे, इसके पश्चात् **अं से लेकर लं क्षं** पर्यन्त समस्त मातृकाओ का उच्चारण करके पुनः ॐ अन्त में लगाये। ये, इस प्रकार के पुटित मंत्र का जप मणिपूर चक्र में करे। हे ईश्वरी! जो पामर इस निर्वाण प्रक्रिया से अवगत नहीं है, वह करोड़ों कल्प में भी मंत्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता ॥११-१९॥

। इति सरस्वतीतन्त्रे द्वितीयः पटलः ।

। द्वितीय पटल समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सरस्वती तन्त्रम्

षष्ठः पटलः

ईश्वर उवाच-

अपरैकं प्रवक्ष्यामि मुखशोधनमुत्तम् ।
यन्नकृत्वा महादिव जपपूजा वृथा भवेत् ॥१॥
अशुद्धजिह्वा दिव यो जपेत् स तु पापकृत् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन जिह्वाशोधनमाचरेत् ॥२॥

ईश्वर कहते हैं- हे महादेवी! जिसे न करने से जपयज्ञ विफल हो जाता है, उस मुखशोधन नामक उत्तम जपाङ्ग को कहता हूँ।

हे देवी ! जो अशुद्ध जिह्वा से जप करता है, उसे पापी कहते हैं। अतः सभी प्रयत्न द्वारा जिह्वा शोधन करना चािहये ॥१-२॥

देव्युवाच -

देवदेव महादेव शूलपाणे पिनाकधृक् ।
पृथक् पृथङ महादेव कथयस्व दयिानधे ॥३॥
शोधनं सर्वा विद्यानां मुखस्य वद में प्रभो ॥४॥

देवी कहती है- हे देवदेव! महादेव, शूलपाणे, पिनाकी! हे दयिनधे! हे प्रभो! आप पृथक् पृथक् रूप से सभी विद्याओं का मुखशोधन कहने की कृपा करें ॥३-४॥

महादेव उवाच -

महित्रपुरसुन्दर्या मुखस्य शोधनं शुभे ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

श्री बीजंप्रणवो ल क्ष्मीस्तारः श्री प्रणवस्तथा ॥५॥
इमंषड क्षंर मन्त्रंस् ुन्दर्यादश धा जपेत्।
श्रृणुस ुन्दरि श्यामाया मुखशोधनमुत्तमम्॥६॥

महादेव कहते हैं- हे शोभने! महित्रिपुरसुन्दरी का मुखशोधन कहता हूँ, श्री बीज, प्रणव, **(ॐकार)** , पुनः श्रीबीज एर्व प्रणव लगाये " **श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ** ", हे सुन्दरी! यह षडक्षर मन्त्र है। श्यामादेवी के मन्त्र जपांग उत्तम मुखशोधन को सुनो ॥५-६॥

निजबीजत्रयंदिव प्रणित्रतयं प ुनः ।
कामत्रयंबिह्नविन्दुरितचन्द्रय ुतंपृ थक्॥७॥
एषा नवाक्षरी विद्या मुखशोधनकारिणी ।
तारायाः श्रृणुचार्वा ङ्गी अपूर्वमुखशोधनम्॥८॥
जीवनीमध्यमंलज्जां भ ुवनेशींततः प्रिये ।
त्र्यक्षरीयंमहािवद्या विज्ञे यामृतविर्षणी ॥९॥

हे देवी! निज बीज **(क्लीं)** तीन, प्रणवत्रय तथा तीन **(क)** को पृथक् पृथक्, विह्न **(र)**, रित **(ई)** एवं चन्द्र तथा विन्दु का योग कराकर तीन ' **क्रीं** ' बीज " **क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं** " इस नवाक्षरी को श्यामातन्त्र में मुखशोधनकारिणी विद्या कहते हैं। हे मनोहर अंगोंवाली! तारादेवी के अपूर्व मुखशोधन को सुनो, हें प्रिये! जीवनी बीज को **(हुं)** बीच में रखकर उसके पूर्व लज्जा बीज **(ह्रीं)** तथा पश्चात् में भुवनेश्वरी बीज को लगाये **(ह्रीं)** " **ह्रीं ॐ ह्रीं** " त्र्यक्षरी महािवद्या मुखशोधिनी अमृतर्वाषणी कही जाती है ॥७-९॥

दुर्गायाः श्रृणुचार्वा ङ्गि मुखशोधनमुत्तमम्।
द्वादशस्वरमुद्धृत्य विन्दुयुक्तत्रयस्तथा ॥१०॥

हे सुन्दर अंगोंवाली! दुर्गाबीज के उत्तम मुख शोधन मंत्र को सुनो, विन्दु युक्त तीन द्वादश स्वर " ऐं ऐं ऐं " को ही दुर्गा का मुखशोधन मंत्र कहते हैं ॥१०॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपरैकंप्रव क्ष्यामि बगलामुखशोधनम्।
वाग्भवंभु वनेशीञ्च वाग्बीजंस् ुरवन्दिते॥११॥

हे सुरवन्दिते! अन्य एक विषय कहता हूँ। यह बगला मुखशोधन है। पहले वाग्भव (**ऐं**), तदनन्तर भुवनेश्वरी बीज (**ह्रीं**), वाग्बीज (**ऐं**) लगाये। " **ऐं ह्रीं ऐं** " ही बगला का मुखशोधन मन्त्र है ॥११॥

मातङ्ग्याः शोधनंदिव अं कुशंवाग् भवस्तथा ।
बीजञ्चङ्कुशमेतद्धि विज्ञेयंत्र्य क्षरीयकम् ॥१२॥

हे देवी! अंकुशबीज, वाग्भवबीज, पुनः अंकुश बीज को लगाने से त्र्क्षरी मातंगी मुखशोधन मन्त्र " **क्रों ऐं क्रों** " गठित होता है ॥१२॥

लक्ष्म्याश्च शोधनंदिव श्रीबीजं कमलानने ।
दुर्गायाः शोधनेमाया वाग् बीजपुटिता भवेत् ॥१३॥
दुर्गेस्वाहा पु नर्माया वाग्बीजञ्च पुनश्च वाक्।
प्रणवंदान्तम् द्धृत्य वामकर्णविभूषितम् ॥१४॥
पुनः प्रणवमुद्धृत्य धनदामुखशोधनम्।
एवंमन्त्रं महादिव धू मावत्या भवेदिप ॥१५॥

हे देवी! कमलानने! लक्ष्मी मन्त्र का मुखशोधन है (**श्रीं**), दुर्गामन्त्र का मुखशोधन है वाग्वीज द्वारा पुटित माया बीज, पुनः यही बीज " **ऐं ह्रीं ऐं दुर्गे स्वाहा ह्रीं ऐं ऐं** "। प्रणवोच्चारण करके वामकर्णयुक्त (**ॐ**) दान्त (**धूं**) का उच्चारण करके पुनः प्रणव लगाये " **ॐ धूं ॐ** " यह है, धनदा का मुखशोधन, हे देवी! यही है, धूमावती का भी मुखशोधन मन्त्र ॥१३-१५॥

प्रणवो विन्दुमान्दिव पञ्चान्तको गणे शितुः ।
वेदिाद गगनंविह्नमन् युग्विन्दुचन्द्रवत् ॥१६॥
द्व्यक्षरंपरमे शिान विष्णोश्च मुखशोधने।
अन्यासांप्रणवो दिव बालादीनां प्रकीर्त्तितम् ॥१७॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हे देवी! प्रणव तथा विन्दु युक्त पंचान्तक (ग) गणेशमन्त्र का मुखशोधन है, अर्थात् " ॐ गं " हे परमेश्वरी! वेदिाद बीज (ॐ) विह्नबीज (रं) मनु (औ) िबन्दु तथा चन्द्र को युक्त करते हुये (' ह ' कार) = " ॐ ह्रौं " ही विष्णुमन्त्र का मुखशोधन मंत्र है, अन्य का प्रणव (ॐ) है ॥१६-१७॥

स्त्रीणाञ्च शूद्रतुल्यं हि मुखशोधनमीरितम् ।
सुखशोधनमात्रेण जिह्वामृतमयी भवेत् ॥१८॥

स्त्री के लिये शूद्र के ही समान मुखशोधन िविहत है अर्थात् प्रणव के स्थान पर दीर्घ प्रणव (ओं) तथा (स्वाहा) के स्थान पर (नमः) का प्रयोग करे, मुखशोधन क्रिया द्वारा जिह्वा तत्काल अमृतमयी हो जाती है ॥१८॥

अन्यथा मूत्रविड्युक्ता जिह्वा भवित सर्वदा ।
भक्षणंर्दूषिता जिह्वा मिथ्यावाक्येत दूषिता ॥१९॥
कल है दूषिता जिल्ह्वा तत् कथं प्रजपेन्मनूम ।
तत्शोधनमनाचर्य न जपेत् पामरः क्वचित् ॥२०॥

मुखशोधन के बिना जीभ विष्ठामूत्र के समान अपिवत्र रहती है, क्योंकि अभक्ष्य खाने से, झूठ बोलने से तथा कलह से दूषित हो जाती है, अतः उस अपिवत्र जिह्वा से मंत्रजप कैसे होगा? पापयुक्त मानव कभी भी जिह्वा शोधन कियेबिना जप न करे ॥१९-२०॥

शैवशाक्तवैष्णवादेः सर्वस्यांवश्यमेव च।
अन्यथा प्रजपेन्मत्रं मोहेन यिद भािविन ॥२१॥

शैवशाक्त वैष्णव सभी इसे जानें। हे भािवनी! यिद मानव मोहवशात् इसके बिना जप करता है, तब -॥२१॥

सर्वः तस्य वृथा दिव मन्त्रसिद्धिर्न जायते ।
अन्ते नरकवासी च भवेत् सोऽपि न चान्यथा ॥२२॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

देवो यिद जपेन्मन्त्रं न कृत्वा मुखशोधनम् ।
पतनं तस्य देवेशि कि पुनर्मर्त्यवासिनाम् ॥२३॥

उसके समस्त अनुष्ठान व्यर्थ होते हैं और सिद्धि नहीं मिलती, उसे अन्त में नरक जाना पड़ता है। यह अन्यथा कथन नहीं है।

हे देवेशी! देवता भी मुखशोधन बिना नन्त्र जपने पर पतन के भागी होते हैं, मृत्यु लोकवासी की बात ही क्या?

। इति सरस्वतीतन्त्रे द्वितीयः पटलः ।

। द्वितीय पटल समाप्त ।

। समाप्त ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

स्वप्रकाशित तन्त्रशास्त्र के अन्य ग्रन्थों की सूची

१. ईशानशिवगुरूदेवपद्धित सं. टी. गणपितशास्त्रिण आंग्ल भूमिका सिहत एन. पी. उण्णी (४ भाग में)

२. तारा-भिक्त-सुधार्णव मूल तथा आंग्ल भूमिका सिहत आर्थर एवलान, सं. श्री पंचानन शास्त्री

३. यिोगनीतंत्रम् सं. प्रो. विश्वनारायण शास्त्री

४. कौलावली मूल तथा आंग्ल भूमिका सिहत, आर्थर एवलान

५. ब्रह्मसंहिता एवं विष्णुसहस्त्रनाम - शांकर भाष्य मूल तथा आंग्ल भूमिका सिहत - आर्थर एवलान

६. शतरत्नसंग्रह - मूल तथा आंग्ल भूमिका सिहत - आर्थर एवलान

६. शतरत्नसंग्रह - मूल तथा आंग्ल भूमिका सिहत - आर्थर एवलान

७. कामाख्यातंत्र मूल संस्कृत, आंग्ल भूमिका सिहत - सं. विश्वनारायणशास्त्री

८. कुलपूजनचन्द्रिका मूल संस्कृत, आंग्ल भूमिका सिहत - बाबूलाल शुक्ला

९. शांभवीतन्त्र म. म. डॉ. पं. गोपीनाथ किवराज जी भाषा शब्दांकनकार - एस. एन. खण्डेलवाल

१०. निरूत्तरतन्त्रम् - अनुवादक - एस. एन. खण्डेलवाल

११. जपसूत्रम् स्वामी प्रत्यगात्मानन्द विरिचत, अनुवादक - एस. एन. खण्डेलवाल, १ से ६ भाग

पोस्ट बॉक्स नं. ११०८,
कचौडी गली, वाराणसी
(उ.प्र.) २२१ ००१

प्रकाशक:
• भारतीय विद्या प्रकाशन •

१, यू. बी. जवाहर
नगर, बँग्लो रोड़,
दिल्ली-११०००७

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/